18/9/1967 प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूँद के प्यासे हम,
लौटा जो दिया तूने, चले जाएँगे जहाँ से हम.....

ज्ञान और अज्ञान। तुम बच्चों में अभी ज्ञान है। ये महिमा किसकी की जाती है या भगत किसकी महिमा करते हैं और तुम बच्चे जो यहाँ बैठे हो, वो किसकी महिमा सुनती हो? ये रात–दिन का फर्क है! वो ऐसे ही ठली बैठ करके "तू ज्ञान का सागर", तो इतना प्यार नहीं है उनमें कुछ भी; क्योंकि पहचान नहीं। तुम बच्चों को पहचान आय करके बाप ने दी कि मैं प्यार का सागर हूँ। वो गाते रहते हैं तुमको प्यार का सागर और प्यार का सागर बनाय रहे हैं; क्योंकि ये प्यार का सागर है ना! कितना प्यारा लगते हैं और सबको प्यार करने वाले; क्योंकि एक/दो को प्यार करते हैं ना! शेर–बकरी भी एक/दो को प्यार करते हैं। तो यहाँ तुम सीखती हो। तो यहाँ ही सीखना पड़ता है। किसके साथ भी वैर–विरोध नहीं होना चाहिए बिल्कुल ही बच्चों का, जिसको बाबा लून–पानी कहते हैं। लून–पानी को वैर–विरोध कहा जाता है, अंदर में नफरत एक/दो के लिए। ...दुःख हर्ता, सुख कर्ता, सुख देने वाले हैं। दुःख की तुम्हारे पास कभी भी खयालात भी नहीं आनी चाहिए। अगर खयालात आती है तो ये पक्का अपन को आसुरी सम्प्रदाय समझें; ईश्वरीय सम्प्रदाय नहीं समझें। तो ऐसे जो किसको दुःख देने वाला है, आसुरी सम्प्रदाय है, तो वो देह–अभिमानी ठहरा और याद की यात्रा में कभी रह नहीं सकते हैं और याद की यात्रा बिगर कभी भी किसका कल्याण होने का है ही नहीं; क्योंकि वर्सा देना(लेना) है जिस बाप से, उनसे तो हरदम याद कर–करके ये जो विकर्म हैं (...)। ये आधाकल्प आसुरी सम्प्रदाओं ने एक/दो को दुःख दिया है। ऐसे नहीं है कि किसी ने शादी किया है, उसने दुःख दिया है, नहीं, ऐसे भी एक/दो से लड़ते–झगड़ते, पाप करते हैं, एक/दो को तंग करते हैं, एक/दो से लड़ते रहते हैं। तो वो भी आसुरी सम्प्रदाय में गिने जाते हैं। भले पुरुषार्थी हैं तो भी कब तलक ये दुःख देते रहेंगे? तभी बाबा रोज़–2 समझाते हैं कि चार्ट रखने से तुम थोड़ा ख्याल करेंगे– हमारा रजिस्टर, जो रजिस्टर है ना, सुधरता जाता है या बिगड़ता जाता है? सुधरता जाता है वा कुछ सुधरा है या जैसे आगे ही आसुरी स्वभाव थे, वो ही धारण करते चले आ रहे हैं? इसलिए बाबा तो बच्चों को सदीव(सदैव) कहते रहते हैं– बच्चे, कभी भी किसको दुःख नहीं दिओ। कोई दुःख देने का तुम्हारे पास कोई कारण ही नहीं है, किसको भी।...स्तुति–निंदा, मान–अपमान, दुःख–सुख, ठण्डी–गरम, फलाना– ये सब–कुछ सहन करना है; क्योंकि सब–कुछ सहन तो करना पड़ता है ना! नहीं, वो बीमारी तो सब–कुछ सहन करता है, वो तो कोई बात ही नहीं होती है। यहाँ ये, कोई ने कुछ कहा तो शांत एकदम। ऐसे नहीं कि उसने कुछ कहा तो उसके लिए दो वचन और कह देना। नहीं, वो आसुरी सम्प्रदाय। तो किसको भी दुःख न देना। ये बाप तो समझाते रहे ना–2– समझो कोई बच्चा किसको दुःख देते हैं, तो बाबा उनको, तो बाप तो समझाएँगे ना! बच्चे, बच्चे को कुछ नहीं कह सकते हैं; क्योंकि बच्चों का काम है बाप के पास आना; अपने हाथ में लॉ नहीं लेना। समझा ना! क्योंकि आजकल गवर्मेण्ट का कायदा है कि कोई समझो .....घूसा मारा, तो वो घूसा नहीं मार सकते हैं, वो कम्प्लेण्ट कर सकते हैं। उसको कहा जाए– लॉ, ऑर्डर यानी वो तो वो गवर्मेण्ट का काम है ना! वो तुम वो काम नहीं करो, वो तुम गवर्मेण्ट के पास आओ। बाकी लॉ हाथ में नहीं लिओ कुछ भी। तो यहाँ तो है ही घर अपना। कोई ने कुछ कहा, आ करके बाप को कहा। इसलिए बाबा कहते रहते हैं कि ये जो रोज़ की जो होती है कचहरी, ये तुमको इशारा दिया था ना! पीछे बुद्धि में बैठता है तुमको? कहाँ बैठते हैं? रात को कचहरी की थी? (किसी ने कहा– रात को बहुतों ने अनुभव सुनाया ना...) भनुभव सुनाया, कुछ भी सुनाया यानी फरमान का निरादर किया। यानी ये तो ये बच्चे

नहीं समझते हैं, यहाँ बच्चे भी जो यहाँ रहने वाले हैं, वो ये समझते ही नहीं हैं कि यहाँ कोई शिवबाबा का भी ऑर्डर चलता है। ब्रह्मा का नहीं, शिवबाबा; क्योंकि ये बाप, ये कहते हैं– शरीर ही दे दिया बाबा का(को), तो कहते हैं जैसे कि मैं ही जैसे हूँ मालिक इस शरीर का। तो वो हो करके, बाबा कहते हैं ना– ऐसे मत समझो कि शिवबाबा कुछ भी ज्ञान सुनाते हैं, अए ब्रह्मा सुनाते हैं, नहीं बच्चे, ऐसे ही समझो शिवबाबा। इसलिए कि इनको शिव याद करे, शिवबाबा को याद करे। बाबा कितना दफा (...)– समझो, ब्रह्मा भुट्टू है चलो, खाली रथ बाबा ने लिया है तुम बच्चों के लिए, तुमको ज्ञान सुनाने के लिए। इसलिए रोज़ कहते हैं– तो ये ऐसे रथ समझो; परन्तु बुद्धि में नहीं आता है किसके, तो वो समझते हैं कि ये ब्रह्मा के वाक्य हैं। नहीं, बाबा कहते हैं– शिवबाबा बैठ करके तुम बच्चों को समझाते हैं। वो ही तुमको सतोप्रधान बनाने का रस्ता बताय रहे हैं, इनको भी बताय रहे हैं। ये गुप्त है, तुम प्रत्यक्ष हो।... क्योंकि तुम्हारे से पूछा जाता है। इनसे कैसे पूछ सकते हैं तुम! बाबा से पूछ सकते हो? नहीं, बाबा पूछ सकते हैं बच्चों से। तो बच्चों को...कहा जाता है कि जो कुछ भी डायरेक्शन्स निकलते हैं, ऐसे ही समझो शिवबाबा के हैं। तो ये शिवबाबा का डायरेक्शन हो करके समझेंगे, उल्टा होगा, सुल्टा होगा, वो तो रिस्पॉन्सिबुल शिवबाबा है ना! तुम लोग को तो कोई हर्जा ही नहीं है बिल्कुल ही। तो तुम सेफ हो रहेगा। अगर इनको समझेगा तो देहअभिमान में आ जाते हो, पीछे उल्टे काम करते रहते हैं। नहीं तो ईश्वर के आगे रहने वाले, उनसे तो और ही विकर्म नहीं होना चाहिए। समझे ना! परन्तु उनको ये मालूम ही नहीं है, वो इतना रिगार्ड रखना ही नहीं जानते हैं कि बाप के आगे कैसा चलना चाहिए भला! राजा हो कोई और उनके बच्चे कैसे चलते होंगे राजकुमार! सो भी कहाँ, अभी तो राजकुमार भी बहुत ही तमोप्रधान हो जाते हैं ना, बाप की इज़्जत लेने में देरी नहीं करते हैं। अभी तो तुम कोई यहाँ के तो राजकुमार नहीं बनते हो ना, आसुरी दुनियाँ के; अभी तो तुम बच्चे ईश्वरीय दुनियाँ के राजकुमार। 'बाबा–2' जो करते रहते हो, सो किसको करते हो? शिवबाबा को। इसको तो दादा कहते हो ना! उसको तो बाबा कहते हो ना! वर्सा तो बाबा से मिलना है तुम बच्चों को। तो वो तो यहाँ बैठा है ना, दादा के तन में बैठा हुआ है ना! तो उनके आगे कितना युक्ति से/रिगार्ड से/रॉयल्टी से चलना, ये ऊँचे–ते–ऊँचा (...)। बच्ची, बादशाहों के जो शहजादे होते हैं, बड़ी उनको शिक्षा मिलती है। देखो, ये जो प्रिन्स ऑफ वेल्स है, जो गद्दी पर पीछे बैठेंगे, कितने उनके ऊपर मत्था मारते हैं, शिक्षा देते हैं उनको। तो तुम तो सभी बच्चे कहते हो ना कि हम भी बाबा आपका बच्चा वो लक्ष्मी–नारायण बनेंगे ना, सेकण्ड बनें, थर्ड बनें, एर्थ बनें, बीस्थ बनें। कम–से–कम वहाँ न बनें तो भला, भला त्रेता के तो बनेंगे ना! ये तो नशा चढ़ा हुआ रहता है ना! ऐसे तो कोई दिल में नहीं कहते हैं कि मैं जाके दास–दासियाँ या वो घोड़े–गधे बनेंगे। घोड़े–गधे ही बनें, प्रजा बनना ये ऐसे ही है जैसे यहाँ कहते हैं– ये तो जैसे गधे के माफिक काम करते ही रहते हैं। हाँ, ऐसे गालियाँ तो देते हैं ना! कुत्ते–बिल्ले के माफिक चलते हैं। वो तुमको तो बड़े रॉयल (होना) चाहिए। यहाँ ही तो तुमको दैवीगुण धारण करने हैं ना बच्चे! तभी बाबा वार(बार)–2 समझाते– तो आसुरी गुण क्यों चलन तुम्हारे होते हैं? तो बाप तो दिल में समझेंगे ना– ये कहलाते तो हैं मैं शिवबाबा (का) बच्चा है; परन्तु चलन जैसे आसुरी बच्चों की है। बाप के बेहद के दिल में ये बैठता है– ये इनकी चलन जो है ना, ये बिल्कुल आसुरी है; क्यों(कि) बाबा समझते हैं उनको अगर मैं कह देऊँ तो बिगड़ने में देरी नहीं करते हैं। आजकल तो है ना बच्चे, कोई सिपाही होगा ना, कोई साहब कुछ कह देगा ना, तो वो भी उनको आँखें दिखलाय देंगे। आजकल का जमाना ही ऐसा है। नहीं तो दो बात उनको सुनाय रहे हैं। तो ये बाबा भी ऐसे समझते हैं– मेरे पास ऐसे बच्चे हैं, जो कोई वक्त में उनको समझावें तो

कुछ उनको उल्टा–सुल्टा बोल देंगे। वो कोई निश्चय थोड़े ही है। बाकी तो कोई शिवबाबा हमको, यहाँ तो बैठे–2 एक/दो को भी कह देते हैं– ये तो शिवबाबा क्या है, हम तो नहीं समझते हैं शिवबाबा है! बैठे–2 भूत आता है ना माया का, तो वो आपस में ही कह देते हैं कि ऐसे कैसे कह सकते हैं– शिवबाबा बैठ करके हमको पढ़ाते! भगवान ने आ करके इसके शरीर में (बोलते) हैं! यहाँ–2 घर में बैठे–2 भी बच्चे जो काम करते हैं, रहते हैं यहाँ, वो भी ऐसे बच्चे आपस में जब मिलते हैं ना, एक जैसा आसुरी स्वभाव वाले। तो फिर वो चौकड़ी होती है ना– चाण्डालों की चौकड़ी; सुना है कभी? हाँ, तो ऐसे–2...चौकड़ी कहा जाता है यानी 5–7 आपस में एक जैसे मत ना, तो वो बकता ही वो ही है आसुरी। जुबान से आसुरी ही बातें निकलती हैं फिर। तो फिर वो कौन ठहरे? इनमें तो मुख से, बस तुम तो बाबा को, बाबा कहते ..... तुम तो रूप–बसन्त हो। आत्मा तुम रूप भी हो और बसन्त भी हो। ये ज्ञान तुम सुनाते हो इन ऑरगन्स द्वारा। तुम्हारे मुख से अभी, अभी रतन निकलने चाहिए। अगर पत्थर निकलते हैं तो पत्थर–बुद्धि। पत्थर–बुद्धि फिर भी आसुरी–बुद्धि को कहा जाता है। तो गीत तो सुना बच्चों ने। ये बच्चे कहते हैं– बाबा। ऐसे कहेंगे ना....– बाबा बरोबर प्यार का सागर है, ज्ञान का सागर है, पवित्रता का सागर है, सुख का। किसकी महिमा कर रहे हो? शिवबाबा की। दूसरे किसकी नहीं कर रहे हो। वो आत्मा है ना! ये आत्मा का ज्ञान है। तुम बच्चे भी आत्मा कहते हो ना– हमारा बाबा। कोई इसके लिए तो नहीं कहते हो ना बच्चे! नहीं, हमारा बाबा जो हमको शिक्षा देते हैं..., ये बड़ी मंजिल है कि अपन को आत्मा समझ करके और बाप को परमात्मा समझते रहें घड़ी–घड़ी– ये बड़ी मंज़िल है। बहुत फेलीयर होते हैं, बहुत एकदम अच्छे–अच्छे। बाबा तो बहुत वारी समझाया– अच्छे–2 नंबर टू,थ्री,फोर,वन ये देही–अभिमानी में ठहर नहीं सकते हैं...और ठहरना है देही–अभिमानी में, तब तो इतना ऊँचा बनेंगे ना बच्ची! सारा दिन बहुत वेस्ट करते हैं झरमुई–झगमुई, ये, ये एक/दो से पूछना, समाचार पूछना...। ये हूबहू ऐसे बाबा के पास बच्चे हैं जैसे कि वो सिंध में होते हैं ना एक/दो– सारा दिन झरमुई–झग(मुई), वो ज्ञान की तो बात ही नहीं ध्यान में आती है। ऐसे भी बच्चे हैं थोड़े। सुनते देखो कितना है, रोज़–2 बाबा के पास बैठ करके सुनते। तुम तो फिर भी तो दूर रहते हो, यहाँ वाले को तो (...)। तो ये तो गाया हुआ है कि घर की गंगा का कोई भी मान नहीं रखते हैं। घर के एक चित्र का कोई मान न, क्यों? यहाँ कृष्ण रखा है ना चित्र, फिर उनका मान क्यों नहीं करते हैं? भला क्यों जाते हैं श्रीनाथ द्वारे में? कृष्ण का चित्र, श्रीनाथ द्वारे का चित्र नहीं रखा है घर में! तो उसके ऊपर पहाका देते हैं– क्यों, चीज़ तो वो ही है ना, फिर घर में जो चित्र रखा है उनका मान नहीं है, जो वहाँ जाते हो! तो वहाँ जाते हो तो जैसे घर के चित्र का मान नहीं रखते हो। अरे! चीज़ तो वो ही है ना! लक्ष्मी–नारायण घर में बैठे हुए हैं ना, फिर ऊपर क्यों जाते हो दूर–2 दर्शन करने के लिए? क्यों, घर में भला लक्ष्मी–नारायण का चित्र रख दो, बिड़ला मंदिर में जाने की दरकार क्यों रखी है? चीज़ तो वो ही है ना बच्ची, कोई फर्क तो नहीं! बस, वो बड़ा मंदिर है, सुहेणा है। वो जा करके वहाँ उनको लव लगता है, जा करके वो सुहेणा लगता है। बस, चीज़ तो एक ही है ना बच्चे! तो देखो, भक्तिमार्ग कैसा चरिया–खरिया है! अभी मालूम पड़ता, बाप आकर समझाते हैं ना– कैसी चरियाई है भक्तिमार्ग में। लिंग, अच्छा लिंग की पूजा..., शिव की पूजा करे ना! अच्छा, घर में आकर पूजा करो। कौन कहते हैं तुमको, पूजा नहीं करो? पत्थर है बच्ची, और तो कुछ नहीं है। ये लिंग जो होते हैं ना, ये तो पहाड़ से आते हैं, घिस–2 के पत्थर लिंग भी हो जाते हैं। अरे, वो पत्थर तुम बैठ करके बनाओ तो ऐसा अच्छा नहीं बनेगा, जितना बाहर से; क्योंकि वो जो आते हैं ऊपर से, उनमें सोने का ज़रा राऽऽऽ भी लगा हुआ है। गाया जाता है ना– सोने का कैलाश पर्वत। सोना वहाँ से

आते हैं। तो सोना तो पहाड़ों पर, पहाड़ों से ही निकलते हैं ना बच्चे सोने! तो वो सोना लगा हुआ भी ज़री–2 पत्थर बहुत मिलते हैं। बहुत ढूँढ़–2 करके आ करके बेचते हैं भी, पत्थर भी बेचते हैं। जो अच्छा गोल होते हैं, घिस–2 करके होते हैं ना, वो भी आ करके पूजते। बस, वो तो पत्थर उठाके कुछ भी, तुमको ढेर मिलेंगे बच्ची पत्थर। मार्बल के, आगरे में जाओ तो ढेर मिलते हैं एकदम। वो तो बनाते हैं खास मार्बल के। तो मार्बल के, जबकि हैं चित्र घर में, तो घर में बैठ करके पूजो। यही तो भगवान है ना! पीछे ये बद्रीनाथ, अमरनाथ और फलाने जाने की दरकार ही क्या है! तो देखो, भक्तिमार्ग में कितना दिखावे और कितने हैं और भक्तिमार्ग वालों को कहो तो बिगड़ जाएगा। तुमको कहो तो तुम खुश होते हैं। बोलते– ठक! टाइम वेस्ट करते थे। बाबा खुद आके कहते हैं– टाइम वेस्ट धक्का खाय, ये शास्त्र वगैरह पढ़े, ये मंदिर बनाए, सब पैसा तुम बच्चों ने ड्रामा के प्लैन अनुसार (...)। तो फिर बच्चे कहते हैं कि हमारा दोष क्या? "दोष क्या?"– वो तो अभी कह सकते हो ना! आगे तो ऐसे नहीं कह सकते– दोष क्या? अभी जब बाप बैठकर समझाते हैं, बोलते हैं– ये तो भक्तिमार्ग में जभी ड्रामा में पार्ट ही है, तो फिर ऐसे करना ही पड़ा। तो बाबा बोलता– हाँ, धक्का खाना ही पड़ा। पार्ट में ऐसे तो है ही– ज्ञान और भक्ति, सुख और दुःख। तो दुःख की निशानियाँ क्या हैं? ये हैं सब निशानियाँ– पैसा गँवाना, तीर्थों के पिछाड़ी ये करना, ये करना, वो करना। ये तो बाप कहते हैं– ये भक्तिमार्ग है। तो अभी तुमको बाप समझावे– बच्ची, ये है दुर्गति मार्ग। ऐसे कभी कोई कहेगा संन्यासी? कोई मनुष्य इस दुनियाँ में नहीं होगा जो ऐसे कहे कि भक्तिमार्ग दुर्गति मार्ग है और ज्ञान सद्गति मार्ग है। अभी चीज़ ही अलग हो जाती है। ज्ञान से सद्गति माना ही मुक्ति और जीवनमुक्ति और भक्ति से (...)। तो बाप देखते हैं जबकि जीवनमुक्त करते हैं, मुक्त करते हैं, फिर ऐसी क्या चीज़ है जिससे तुम दुर्गति को पहुँचते हो? भक्ति, और तो कोई चीज़ है नहीं। तो है ही खेल ज्ञान–भक्ति। अभी बहुत–3 संन्यासी ये जानते हैं– ज्ञान, भक्ति, वैराग्य; ज्ञान, भक्ति, वैराग्य बच्ची बहुत। बाबा तो बहुतों के सम्पर्क में आए हुए हैं ना और सिंध में यहाँ–वहाँ, जहाँ–तहाँ। तो वो भी...कहते– ज्ञान, भक्ति, वैराग्य बस। अभी कहते मुख से–ज्ञान, भक्ति, वैराग्य; अर्थ का कुछ भी पता नहीं। अभी ध्यान में आते हैं; नहीं तो आगे जो बैठ करके सुनाते थे, उनका अर्थ कुछ भी नहीं करते थे। बोला– ज्ञान है ये देखो शास्त्र पढ़ना, भक्ति करना। जो भक्ति पूरी नहीं करते हैं उनको सुख नहीं मिल सकते हैं। ये ज्ञान है, शास्त्र का ज्ञान सुनना चाहिए। तभी तो शंकराचार्य कहा ना कि ये शास्त्र भगवान आके कहे कि तुम शास्त्र न पढ़ो, हम कभी नहीं मानेगा। देखो, भक्ति कितनी है! भक्ति के हैं ना, तो भक्ति वाले फिर और चीज़ को क्यों मानेंगे, अपनी भक्ति को ही मानेंगे। तो भक्ति को छोड़ने में कितना! यहाँ बहुत आती हैं बच्चियाँ, जिनको अगर समझो कि यहाँ ज्ञान में आए और कुछ थोड़ा घाटा या बीमार पड़ गया ना, झट जाएगा देवी के पास, वो वर माँगने के लिए– हमारा बच्चा बीमार हुआ। आदत पड़ी हुई है ना, चले जाएँगे और यहाँ से छूट जाएँगी झट और यहाँ देखो कोई बात, यहाँ कोई आशीर्वाद ही कोई नहीं माँग सकते हैं। वहाँ तो जा करके प्रार्थना करते हैं– हमारे ऊपर कृपा करो, हमारा बच्चा बीमार है, ये है, फलाना है, टीरा है। ऐसे होते हैं ना बच्ची! वो नहीं बच्चियाँ जाती हैं देवी के पास, आँखें किसकी खराब होती हैं, तो देवियों के पास जाते हैं, फिर वो रखती हैं वो बना करके आँख के ऊपर, फलाना ... के ऊपर, तो इनकी आँखें अच्छी हो जावें! अभी वो तो है ठीक, भक्तिमार्ग में भी फल मिलता है भक्ति पा(का); परन्तु अल्पकाल क्षणभंगुर। मिलता क्यों नहीं है, कुछ–न–कुछ, बाबा कहते हैं ना– भक्ति का भावना का भाड़ा, भावना का भाड़ा हम देते हैं। भले हनुमान को भी कहते हैं ना कि ये–3 भगवान है, तो चलो बैठ करके वो जभी, जभी वो हनुमान को याद करते हैं तो हनुमान का

साक्षात्कार होते हैं। वो समझते हैं– देखो, हमको साक्षात्कार हुआ, हम मुक्त हो गया। बस, उसमें वो समझते हैं मुक्त हो जाएँगे। लक्ष्मी–नारायण का साक्षात्कार हुआ, कृष्ण का हुआ, किसका भी हुआ, वो बोलेगा– हम मरने के बाद मुक्त हो जाएँगे, मुक्त हो करके इस कृष्णपुरी में जाएँगे। अभी हनुमानपुरी पता नहीं...कहाँ हो सकती है, जो हनुमानपुरी में जाएँगे! हाँ, गणेश की पुरी पता नहीं कहाँ होती है, नाक वाला वो, कहाँ उनको गणेश की पुरी होगी जो वहाँ जाएँगे या गणेश के पास, अंत मते सो गत गणेश के पास कहाँ जाएँगे! तो देखो, समझ नहीं है ना! अभी तुम बच्चों में समझ हो गई है। तुम इन सबको अपने (...) और सुख के रास्ते पर; क्योंकि वो है दुःख। भक्ति है दुःख का रास्ता; ज्ञान है सुख का रास्ता। अरे, ज्ञान से सतयुग की बादशाही मिलती है और अज्ञान से कलहयुग की बादशाही, एकदम इसको कहा जाए– ये विकारी, नर्कवासी बनने की बादशाही। ये सब, इस समय में सभी राजा–रानी तथा प्रजा नर्कवासी के मालिक हैं। मालिक कहो, बादशाह कहो, जो चाहिए सो कहो। अभी ये किसको मालूम थोड़े ही है बाहर वाले किसको भी.... नर्कवास के हैं, नर्कवासी हैं, यथा राजा–रानी तथा हम नर्कवासी हैं और वो सिद्ध, बाबा ने कहा है ना, कितना सिद्ध करता है कि बरोबर हम नर्कवासी हैं; क्योंकि मरते हैं तो स्वर्ग में जाते हैं। तो यहाँ वाले सभी जब तलक मरे नहीं तभी तो नर्कवासी ठहरे ना! स्वर्ग में तो कोई नहीं कहेंगे कि हम स्वर्गवासी भये, स्वर्ग में तो स्वर्ग ही है। वहाँ पुनर्जन्म, कितना तुमने समझ लिया है, आधाकल्प तुम जन्म–मरण स्वर्ग में होता है तुम्हारा। वहाँ मरण की बात नहीं होती है, बाप ने समझाया है। बाकी स्वर्गवासी। अभी यहाँ क्या बैठ करके करते हो? हम स्वर्गवासी बनने के लिए स्वर्ग की स्थापन करने वाले बाबा के पास बैठे हैं। वो हमको ये ज्ञान का एक बूँद देते हैं जैसे, उससे हम चले जाते हैं स्वर्ग में। बूँद भी, क्यों(कि) बाबा ने कहा ना– थोड़ा भी तुम ज्ञान कोई सुने तो भी स्वर्ग में जाएगा। बाकी तो है पुरुषार्थ के ऊपर। बाकी है तो ठीक, गीत देखो कितना अच्छा है! कोई इसका अर्थ थोड़े ही समझेंगे कि ज्ञान का सागर लोटा भी हमको देवे, लोटी जैसे गंगा से नहीं भर करके आती है, तो ये सीखे हुए हैं ना गीत–वीत कि लोटी भी हम गंगा की, .....तो हम पतित से पावन बन जाएँगी; क्यों(कि) गंगा पतित–पावनी है, तो लोटी भी भर करके। . ...पानी में डाल करके लोटी क्यों ले जाते हैं? लोटी ले ही इसलिए जाते हैं कि रोज़ उसमें से एक ड्रॉप निकाल करके, पानी में मिला करके और फिर स्नान करते हैं, जैसे कि हम गंगा का स्नान करते हैं। तुम लोग इतने तीर्थ यात्रा की नहीं है, ऐसे सम्पर्क (में) नहीं आए। बाबा ऐसे बहुत सम्पर्क में आते हैं। अरे! विलायत में इतने–2 घड़ा–3 भर करके, राजे लोग जो ऐसे होते हैं बहुत वैष्णव, वो साथ में ले जाते थे और फिर मँगाते रहते हैं गंगा। देखो, जेल में गए थे अभी, ये जो...गऊओं के पिकेटिंग में गए। तो देखो, जेल में भी गंगा–जल माँगने लगे कि हमको गंगा–जल दो। तो उनको गंगा–जल भी सरकार को देना पड़े। क्यों जैसी है सरकार तैसी वो मरो और गंगा–जल से क्या करेंगे! तो बाप बैठ करके इतना अच्छी तरह से समझाते भी हैं कि बच्चे, गफलत, तुमको माया थप्पड़ लगाती है। ऐसे तुम विकर्म कर देते हो या किसको दुःख देते हो, ऐसे समझो कि माया ने हमको थप्पड़ लगाया। हमने पाप कर लिया, हमको लिखना पड़ेगा कि हमने (...)। अच्छा, तुमको नहीं सुनाएगा, रजिस्टर में तो लिखेगा ना! तो इसमें तुम कचहरी करो। कचहरी करो या वो आपे ही रजिस्टर में लिखें, अपनी कचहरी आपे ही करें तो अच्छा ही है; क्योंकि बाप कहते हैं– तुम अपने आप को ही तिलक देते हो–राजतिलक, तमोप्रधान से सतोप्रधान आपे ही बन। इसमें... बाप रस्ता दे, श्रीमत देते हैं कि ऐसे करो। बस, तुम बच्चों को ऐसे करना है। बोलता है– तुम अपन को राजधानी का मालिक बनाओ। कैसे? मुझे याद करो, स्वदर्शन चक्र को याद करो, दैवी गुण धारण करो। करेगा सो पाएँगे। इसमें आशीर्वाद की तो कोई

बात ही नहीं है। आशीर्वाद तो बहुत ही माँगी, ढेर माँगी, मत्था टेका, बहुत ही ये पत्थरों से मत्था तोड़ा। अभी तो पत्थरों से मत्था तोड़ने का नहीं। ये तो बाप और तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए, बिल्कुल ही बाप बेहद का मिला है। अभी उनके सर्विस में मददगार (...)। तो पूछना होता है। ये भी लिखना पड़े– कुछ बाबा की सर्विस की? कोई अंधे की लाठी बनी? कितने अंधे की लाठी बनी? अभी जितने अंधे की लाठी जास्ती बनेगा वो अच्छा, अच्छा वो अपना कल्याण वो समझेगा; क्योंकि बहुतों का कल्याण समझते हैं और घड़ी–2 बाबा का याद करेंगे। हाँ, बाबा को याद करो, बाबा को। खूब तो बाबा का परिचय देते हैं। तो बरोबर ये भी याद है ना! ये निष्ठा की तो कोई बात नहीं है ना! नहीं, बैठने की तो कोई बात नहीं है ना! ये तो उठते,बैठते,चलते,जाते तुम कैसी सर्विस कर सकेंगे? तभी तो बोला– रेल में भी तुम सर्विस कर सकते हो। कि रेल में बैठे हो, कोई गुरू–गोसाईं कोई–2 का– आओ तो, तो किसके हो तुम भगत? भई कृष्ण का। अरे पर ऊँचे–ते–ऊँचा कौन है, ये बताओ। भई ऊँचे–ते–ऊँचा तो भगवान है सबका बाप। अरे तो उन बाप को याद करो ना, वर्सा तो तुमको बाप से मिलेगा ना! इनसे कहाँ से, क्या मिलेगा तुमको! यानी रचता ही बाप है, तुम्हारी आत्माओं, सबका आत्माओं का बाप वो है। तो आत्माओं को वर्सा तो उस बाप से मिलता है ना बड़ा बेहद का। शरीर के बाप से क्या मिलता है तुमको? बहुत थोड़ा मिलता है। कहाँ शरीर (के) बाप से, भले कोई राजा के पास ही जाके जन्म लेते हैं, तो भी वो भी अल्पकाल होते हैं क्षणभंगुर, उनमें भी कोई सुख तो नहीं है, सदा जो(तो) राजा नहीं बनते हैं। ये तो गैरेंटी, तुम ये जानते हो– वहाँ तुमको ये मालूम नहीं पड़ेगा कि हम कोई वो वर्सा ले आए हैं बेहद के बाप का, जो हमको ये सुख मिल रहा है या वहाँ ये ज्ञान नहीं रहता है कि हमको कोई वर्सा ले आए हैं, जो हम जन्म–जन्मांतर राजा भी बनेंगे। वो थोड़े ही तुम लोग को रहता है, नहीं, वो सब भूल जाते हो। इस समय में सभी ज्ञान तुमको मिलता है। तो देखो, जबकि इतना वर्सा मिलना है तो कितना बच्चे पुरुषार्थ करना चाहिए। अगर पुरुषार्थ न करते हैं तो अपने पैर के ऊपर कुल्हाड़ा लगाते हैं ना! किसको दुःख देते हैं, फलाना करते हैं, टीरा करते हैं। तो नहीं, बाबा जो कहते हैं लिखते रहो तो डर रहेगा तुमको। क्योंकि लिखते हो क्यों? बाप को दिखलाने के लिए। तो बाबा देखेगा तो शर्म आएगा। ये तो जैसे स्कूल में पढ़ते हैं, रजिस्टर खराब होते हैं तो माँ–बाप के पास जाते हैं। भेजते हैं माँ–बाप के पास देखने के लिए, सही करने के लिए। तो बाप देख लेते हैं, मास्टर भी देख लेते, बाप भी देख लेते हैं तो स्टूडेण्ट्स भी देख लेते हैं कि इनकी चाल–चलन और पढ़ाई वगैरह में बहुत फर्क है। रात–दिन का फर्क रहता है बच्ची! रात–दिन का फर्क नहीं हुआ? कहाँ वो बादशाह बन जाते हैं, कहाँ वो डेड–चमार बन जाते हैं! पढ़ते तो हैं ना सभी। पढ़ाई में देखो कितना फर्क रहते हैं! क्या से क्या बन जाते हैं! तो बाप तो कहेंगे ना बच्चों को– बच्चे, गफलत छोड़ो और खबरदार! पीछे पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा; क्योंकि बाप ने कह दिया है, बाप ने ही खुद कह दिया। अरे, ये तो नहीं कहते हैं ना, बाप कहते हैं– पिछाड़ी में तुमको सबको अपना–2 पुरुषार्थ का ज़रूर साक्षात्कार होगा, जो फिर तुमको वार–2 रोना पड़ेगा। कहते– ओहोऽऽ! ये क्या हुआ! बस, ये ही हमको मिलेगा,...ये जो बाप का वर्सा– जाके दासी बने, जाके प्रजा में ये बनेंगे। तुम जानते तो हो ना, शुरू में ही ध्यान में जा करके बोलते– अरे रे! ये दासी कहाँ से आई! यहाँ क्यों ये हमारे आगे खड़ी है यहाँ? बहुत दफा ऐसे करती थी तो बाबा बंद कर देते..., बोलता–ऐसे मत करो किसको भी। बंद कर दिया एकदम। तो थोड़ा ही तो दिखाया तो है ना बरोबर कि उनको साक्षात्कार होते हैं। तो बाबा तो तुम बच्चों को कह देते– पिछाड़ी में तुम बच्चों को बहुत साक्षात्कार होंगे। जो–2 भी तुम्हारी चलन गंदी चली है वो सबका साक्षात्कार (...)। साक्षात्कार बिगर तुमको सज़ाएँ कैसे मिल

सकती हैं, कायदा ही नहीं है। ....सुन करके एक कान से, ऐसे बहुत बच्चे हैं यहाँ रोज़ सुनने वाले, एक कान से सुनते, दूसरे कान से निकल जाता है। ऐसे नहीं कि बेहरे हैं या बीमार हैं या ये हैं। वो तो ये तो जैसे कि ये बुड्ढी–वुड्ढी, वहाँ भी वो कोई सुनती बिचारी थोड़े ही है। बस ताज पहन करके बैठी है ऐसे, कुछ भी सुनती (...), बहरी है ना! वैसे तुम्हारे पास, तुम जो आते हो वहाँ से, उनमें भी ऐसी बहुत हैं। यहाँ आ करके बहुत अच्छी तरह से उनको समझाते हैं– घर में कभी भी कोई भी ऐसे ठिक्कर–2 पर नहीं, बिल्कुल मीठी होके रहो। कोई भी गुस्सा करे, पति अच्छा मारते हैं, कुछ भी करते हैं, तो ये खड़ा हो करके हर्षित रहो। है ना! और बाबा ने समझाया है कि जब रोज़ वो क्रोध करते हैं कोई बात के ऊपर, तो वो दे दिओ। अगर विकार लिए कहते हैं, हाँ हाथ जोड़ती हैं, पाँव पड़ती हैं, मुझे रात–दिन मुझे आवाज़ आती रहती है– काम महाशत्रु है, इस पर जीत करो, ये विनाश सामने खड़ा है, जगतजीत बनेंगे। अभी हम जगतजीत बनें, वैकुण्ठ के मालिक बनें या स्वर्ग के मालिक बनें या हम नर्क के मालिक...बनें तुम्हारे लिए? कुछ समझो, सोचो कुछ। ऐसे नहीं कि झगड़ा करना उनसे, झगड़े से तो झगड़ा हो जाते हैं। नहीं, बहुत प्यार से, एकदम नम्रता से, पाँव पर गिर जाओ, कुछ भी करो। .....रोने लग पड़ियो, समझा ना! ये मुझे क्यों नर्क में ढकेलते हो, मैं तो अभी (...)। बहुत–2 मीठा बनना है, बहुत। देखो, ये देवताएँ मीठे होते हैं ना बहुत, प्यारे लगते हैं। तो जो सर्विस करेगा वो प्यारे नहीं लगेगा बाप को यहाँ! जो सर्विस नहीं करते होंगे वो प्यार क्या क्या/कैसे प्यारे लगेंगे! ये तो विचार की बात है ना! तो भगवान आते हैं जब बच्चों के पास, तो भी कह देते हैं– देखो, तुम बच्चों को आया हूँ मैं सद्गति यानी स्वराज्य देने और देखो, कुछ भी मत पर नहीं चलते हैं, ये तूफान में..., गिर जाते हैं, मर जाते हैं एकदम। थोड़ा ज़रा भी तूफान लगते हैं, थोड़ा इतना भी, तो भी गिर पड़ते हैं, ऐसे कच्चे हैं। तो ऐसे कच्चे को क्या करेंगे, क्या काम के रहेंगे। कोई काम के थोड़े ही रहे। नहीं, काम के जो रहते हैं, वो ही पुरुषार्थ करते हैं, वो ही सर्विस करते हैं, वो ही फिर ऊँच पद भी पाते हैं। बच्ची, बहुत ये पढ़ाई वो ऑर्डिनरी कॉमन पढ़ाई नहीं है। वो तो बाप समझाते हैं, सारे देखो पढ़ते ही पढ़ते रहते हैं अल्पकाल क्षणभंगुर सुख। जाओ भागवत सुनो, अल्पकाल कनरस सुख। कुछ तो सुख है तब तो जाते हैं ना! तो वो बाप बोलते हैं– सब भक्तिमार्ग में अल्पकाल क्षणभंगुर सुख और ये है 21 जन्म का सुख बाप द्वारा। तो बाप को कितना, कहते भी हैं– प्यार का सागर है, शांति का सागर है, सुख का सागर है, हम सबको ये बाबा से वर्सा मिलना ही है। तो सेवा करेंगे तभी तो मिलेंगे ना बच्चे और फिर दैवी गुण धारण करेंगे तब तो मिलेंगे ना और इसलिए बाबा कहते हैं, वो जो बैज लगते(लगाते) हो ना, उसको देख करके– मुझे ऐसा बनने का है, सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। 16 कला सम्पूर्ण कैसे बनेंगे? जब याद करते रहेंगे। याद करते हैं, जो इतना 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे? किसको दुःख तो नहीं देते हैं? कोई आसुरी चलन तो मेरे में नहीं है? झूठ–पाप तो नहीं है? चोरी–चकारी तो नहीं है बच्चे? ....करते हैं ना अपना बहुत–बहुत। सो भी कोई एक जन्म की बात थोड़े ही है, अभी तो बाप आए हैं, 21 जन्म का ये वर्सा मिलता है। बच्ची, जब अंत वेला होगा ना, सबको साक्षात्कार होगा... और सबको बताय देंगे। वो जान जाएँगे, सब जान जाएँगे– ये बनेंगे, ये बनेंगे, ये बनेंगे, ये बनेंगे। पिछाड़ी में ट्रान्सफर जो होना है ना! तो उस समय में तो मार्क्स निकल आती हैं ना सभी! ट्रान्सफर होने के पहले, दूसरी क्लास में जाने पहले मार्क्स की रिज़ल्ट निकल जाती है, पास–नापास की। तो तुम भी जभी जाने वाले हो अपर स्टेज में यानी अपर क्लास में; क्योंकि अपर क्लास में जाते हैं ना! ....तुमको ज़रूर मार्क्स का तो पता पड़ेगा ना! तो वो सब पिछाड़ी में पड़ेगा और बहुत रोएँगे, ज़ार–2 रोएँगे। पीछे क्या करेंगे, कुछ कर थोड़े ही सकेंगे! हाँ, गुस्सा लगेगा, .....बात तो उसमें

कुछ भी नहीं है। उसमें क्या करेगा, वो तो रिज़ल्ट हो गई ना! तकदीर में जो ललाट में था सो अपने–आप ही ले लिया। तो बार–2 बाप समझाते रहते हैं सब बच्चों को, अभी यहाँ नहीं समझाते हैं– हम तो, हमारी तो बेहद में जाती है ना...! क्योंकि उन ब्राह्मणियों को भी तो सावधान करते हैं ना बाबा! इस ब्राह्मणों को भी तो सावधान करते हैं ना! ऐसे क्या समझते हो, ये नहीं सावधान होते हैं क्या या ये पार हो गया? बाबा नहीं कहते हैं– मैं पार नहीं जा सकता हूँ कभी भी, कर्मातीत अवस्था में यानी कोई भी विकर्म मेरे से न हो, ये हो नहीं सकते हैं। ये विकर्म, कर्मातीत अवस्था आएगी तब शरीर छोड़ना पड़ेगा, तभी कुछ–न–कुछ विकर्म रहा हुआ है ज़रूर। तो तुम भी ऐसे ही, खाओ भी, शिवबाबा को याद करना है, मैं शिवबाबा के भण्डारे से खाती हूँ– चलो, ये तो बिल्कुल ईज़ी है और मूँझों मत, बिन्दी–2 कर–करके बहुत मूँझती हैं एकदम, बिन्दी–2 कर–करके। बिन्दी–2 क्यों मूँझते हो? बिन्दी कहने की दरकार ही नहीं है। हम आत्मा हैं और वो परमात्मा है यानी वो तो पवित्र आत्मा है– बस, बात ही थोड़ी, कोई दूसरी कोई चीज़ थोड़े ही है। ये बाबा है, बस। बाकी वो हम ज़ोर करके बिन्दी को याद करें, छोटी बिन्दी को, अरे! ये थोड़े ही कुछ करना है बैठ करके। नहीं, वो आत्मा तो बाबा है ना, तो वैसे वो बाबा ऊपर में रहते हैं, वो भी ऐसे ही है परमात्मा, वो सुप्रीम सोल, अंग्रेज़ी में .....। वो परमात्मा, अंग्रेज़ी का अर्थ है– सुप्रीम सोल। वो भी आत्मा ही है, कोई दूसरी चीज़ थोड़े ही है। उसमें भी ज्ञान–सागर है, तुम भी तो ज्ञान–सागर बनती हो। इतना सारा ज्ञान तुम्हारे में नहीं बैठता है? बैठता है ज्ञान। पूरा ही देते हैं ना! ज्ञान जो है उनके पास, वो सभी देंगे, रख करके क्या करेंगे! सांढेंगे ज्ञान (क्या), बाप कहते हैं मैं ज्ञान को रख लेऊँगा.... नहीं, जो है ड्रामा के प्लैन वो सब खलास हो जाएगा। शिवबाबा के भण्डारे..., बाबा समझाया ना बच्चे– जो अपन को अर्पणमय समझते हैं कि सब–कुछ बाबा को अर्पण कर दिया, उनका ही बच्चा बन गया हूँ, जो हमारा है मैं तो अब शिवबाबा को दे दिया है, उसकी मत पर हम खर्चा करते रहते हैं ना, वो भी जैसे गोया शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं; क्यों(कि) बहुत बच्चे हैं जो बाबा को सारा महीने का पोतामेल भेज देते हैं और बाबा कुछ भी करेक्शन होती है, तो लिख देते हैं कि भाई, ये तुम्हारा कुछ राँग है, खर्चा या फलानी चीज़। हो गया! बाबा कहते हैं बच्चे– 5000 बरस के बाद फिर मैं आया हुआ हूँ, तुम बच्चों को शृंगारने फिर से, ये विश्व का मालिक बनाने।

ऐसे मीठे–2 पुरुषार्थी, फिर सर्विसेबुल, बाबा चिट्ठियों में भी ऐसे लिखते रहते हैं– सर्विसेबुल और बहादुर भी बनना चाहिए, ये वातावरण अच्छा खरे करने चाहिए। डरने की बात नहीं है। बाबा कभी भी ऐसे बच्ची को, कुमारी को वो देख करके चलन फिर कहाँ भेज देते हैं। देखता हूँ– नहीं, ये बच्ची थोड़ी नाजुक है, कोई को भी देख करके ऐसे डर जाती है बिल्कुल ही, तो फिर माताओं को माँगता रहता हूँ। इसलिए बोलता रहता हूँ– बच्चे, जो भी माताएँ हैं, देखो बोलता हूँ ना– अरे बच्ची! चलता है तुम्हारा? (किसी ने कहा–हाँ) जो भी माताएँ हैं, 15 रोज़, महीना, दो महीना, चार महीना सर्विस कर सकती हैं, वो अपना नाम बाबा के पास भेज देवें या ब्राह्मणी द्वारा या ब्राह्मणी भेज देवें। तो देखो, सबके लिए कहता हूँ ना, जो प्रदर्शनी में जा सकती हैं, सर्टीफिकेट चाहिए ब्राह्मणी का कि ये सर्विस कर सकती है। ऐसे नहीं कि सब–कोई लिख देवें। समझे ना! कि हाँ, हम कर सकती हैं, फिर भी सीख लेंगे। नहीं–2, सीख लेंगे वाला नहीं, प्रदर्शनी में और ये म्युज़ियम में बहुत होशियार चाहिए; नहीं तो एक कच्ची होगी ना, सबकी आबरू गुमाय देंगी।

सर्विसेबुल मीठे–2 बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।